सुत्त-सार

(दीघनिकाय एवं मज्झिमनिकाय)

प्रथम भाग

सत्येंद्र नाथ टंडन

सुत्त-सार

(दीघनिकाय एवं मज्झिमनिकाय)

(प्रथम भाग)

सत्येंद्र नाथ टंडन

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

सुत्त-सार

(प्रथम भाग)

विषय-सूची

भूमिका xi

दीघनिकाय भाग - १

१. ब्रह्मजालसुत्त १
२. सामञ्ञफलसुत्त २
३. अम्बट्ठसुत्त ४
४. सोणदण्डसुत्त ७
५. कूटदन्तसुत्त ९
६. महालिसुत्त ११
७. जालियसुत्त १३
८. महासीहनादसुत्त १४
९. पोट्ठपादसुत्त १५
१०. सुभसुत्त १८
११. केवट्टसुत्त १९
१२. लोहिच्चसुत्त २०
१३. तेविज्जसुत्त २१

दीघनिकाय भाग - २

१. महापदानसुत्त २४
२. महानिदानसुत्त २७
३. महापरिनिब्बानसुत्त २९
४. महासुदस्सनसुत्त ३४

५. जनवसभसुत्त ३६
६. महागोविन्दसुत्त ३९
७. महासमयसुत्त ४२
८. सक्कपञ्हसुत्त ४२
९. महासतिपट्ठानसुत्त ४४
१०. पायासिराजञ्ञसुत्त ४७

दीघनिकाय भाग - ३

१. पाथिकसुत्त ४८
२. उदुम्बरिकसुत्त ५०
३. चक्कवत्तिसुत्त ५२
४. अग्गञ्ञसुत्त ५५
५. सम्पसादनीयसुत्त ५७
६. पासादिकसुत्त ५९
७. लक्खणसुत्त ६१
८. सिङ्गालसुत्त ६२
९. आटानाटियसुत्त ६३
१०. संगीतिसुत्त ६४
११. दसुत्तरसुत्त ६५

मज्झिमनिकाय भाग - १

१. मूलपरियायवग्ग ६६
१. मूलपरियायसुत्त ६६
२. सब्बासवसुत्त ६७
३. धम्मदायादसुत्त ६९
४. भयभेरवसुत्त ७०
५. अनङ्गणसुत्त ७२
६. आकङ्खेय्यसुत्त ७४
७. वत्थसुत्त ७४

८. सल्लेखसुत्त ७६
९. सम्मादिट्ठिसुत्त ७८
१०. सतिपट्ठानसुत्त ८०
२. सीहनादवग्ग ८३
१. चूळसीहनादसुत्त ८३
२. महासीहनादसुत्त ८४
३. महादुक्खक्खन्धसुत्त ८६
४. चूळदुक्खक्खन्धसुत्त ८७
५. अनुमानसुत्त ८८
६. चेतोखिलसुत्त ९०
७. वनपत्थसुत्त ९१
८. मधुपिण्डिकसुत्त ९१
९. द्वेधावितक्कसुत्त ९४
१०. वितक्कसण्ठानसुत्त ९५
३. ओपम्मवग्ग ९७
१. ककचूपमसुत्त ९७
२. अलगद्दूपमसुत्त ९८
३. वम्मीकसुत्त १००
४. रथविनीतसुत्त १००
५. निवापसुत्त १०१
६. पासरासिसुत्त १०२
७. चूळहत्थिपदोपमसुत्त १०४
८. महाहत्थिपदोपमसुत्त १०६
९. महासारोपमसुत्त १०७
१०. चूळसारोपमसुत्त १०८
४. महायमकवग्ग १०९
१. चूळगोसिङ्गसुत्त १०९

२. महागोसिङ्गसुत्त १०९
३. महागोपालकसुत्त ११०
४. चूळगोपालकसुत्त १११
५. चूळसच्चकसुत्त ११२
६. महासच्चकसुत्त ११४
७. चूळतण्हासङ्खयसुत्त ११६
८. महातण्हासङ्खयसुत्त ११७
९. महाअस्सपुरसुत्त ११८
१०. चूळअस्सपुरसुत्त ११९
५. चूळयमकवग्ग १२१
१. सालेय्यकसुत्त १२१
२. वेरञ्जकसुत्त १२२
३. महावेदल्लसुत्त १२२
४. चूळवेदल्लसुत्त १२३
५. चूळधम्मसमादानसुत्त १२३
६. महाधम्मसमादानसुत्त १२४
७. वीमंसकसुत्त १२५
८. कोसम्बियसुत्त १२५
९. ब्रह्मनिमन्तनिकसुत्त १२६
१०. मारतज्जनीयसुत्त १२८

मज्झिमनिकाय भाग - २

१. गहपतिवग्ग १३०
१. कन्दरकसुत्त १३०
२. अट्ठकनागरसुत्त १३१
३. सेखसुत्त १३१
४. पोतलियसुत्त १३२
५. जीवकसुत्त १३३

६. उपालिसुत्त १३४
७. कुक्कुरवतिकसुत्त १३५
८. अभयराजकुमारसुत्त १३६
९. बहुवेदनीयसुत्त १३७
१०. अपण्णकसुत्त १३८
२. भिक्खुवग्ग १३९
१. अम्बलट्ठिकराहुलोवादसुत्त १३९
२. महाराहुलोवादसुत्त १३९
३. चूळमालुक्यसुत्त १४०
४. महामालुक्यसुत्त १४०
५. भद्दालिसुत्त १४१
६. लटुकिकोपमसुत्त १४३
७. चातुमसुत्त १४४
८. नळकपानसुत्त १४४
९. गोलियानिसुत्त १४५
१०. कीटागिरिसुत्त १४५
३. परिब्बाजकवग्ग १४७
१. तेविज्जवच्छगोत्तसुत्त १४७
२. अग्गिवच्छसुत्त १४७
३. महावच्छसुत्त १४८
४. दीघनखसुत्त १४९
५. मागण्डियसुत्त १५०
६. सन्दकसुत्त १५१
७. महासकुलुदायिसुत्त १५२
८. समणमुण्डिकसुत्त १५३
९. चूळसकुलुदायिसुत्त १५४
१०. वेखनससुत्त १५५
४. राजवग्ग १५७

१. घटिकारसुत्त १५७
२. रट्ठपालसुत्त १५८
३. मघदेवसुत्त १५९
४. मधुरसुत्त १६०
५. बोधिराजकुमारसुत्त १६०
६. अङ्गुलिमालसुत्त १६२
७. पियजातिकसुत्त १६३
८. बाहितिकसुत्त १६४
९. धम्मचेतियसुत्त १६५
१०. कण्णकत्थलसुत्त १६६
५. ब्राह्मणवग्ग १६७
१. ब्रह्मायुसुत्त १६७
२. सेलसुत्त १६८
३. अस्सलायनसुत्त १६९
४. घोटमुखसुत्त १७०
५. चङ्कीसुत्त १७१
६. एसुकारीसुत्त १७१
७. धनञ्जानिसुत्त १७२
८. वासेट्ठसुत्त १७३
९. सुभसुत्त १७४
१०. सङ्गारवसुत्त १७५
मज्झिमनिकाय भाग - ३
१. देवदहवग्ग १७६
१. देवदहसुत्त १७६
२. पञ्चत्तयसुत्त १७७
३. किन्तिसुत्त १७८
४. सामगामसुत्त १७९

५. सुनक्खत्तसुत्त १८०
६. आनेञ्जसप्पायसुत्त १८१
७. गणकमोग्गल्लानसुत्त १८२
८. गोपकमोग्गल्लानसुत्त १८३
९. महापुण्णमसुत्त १८४
१०. चूळपुण्णमसुत्त १८५
२. अनुपदवग्ग १८६
१. अनुपदसुत्त १८६
२. छब्बिसोधनसुत्त १८७
३. सप्पुरिसधम्मसुत्त १८७
४. सेवितब्बासेवितब्बसुत्त १८८
५. बहुधातुकसुत्त १८९
६. इसिगिलिसुत्त १९०
७. महाचत्तारीसकसुत्त १९०
८. आनापानसतिसुत्त १९१
९. कायगतासतिसुत्त १९२
१०. सङ्खारुपपत्तिसुत्त १९३
३. सुञ्ञतवग्ग १९४
१. चूळसुञ्ञतसुत्त १९४
२. महासुञ्ञतसुत्त १९४
३. अच्छरियअब्भुतसुत्त १९५
४. बाकुलसुत्त १९६
५. दन्तभूमिसुत्त १९६
६. भूमिजसुत्त १९७
७. अनुरुद्धसुत्त १९८
८. उपक्किलेससुत्त १९९
९. बालपण्डितसुत्त २००
१०. देवदूतसुत्त २०१

४. विभङ्गवग्ग २०३
१. भद्देकरत्तसुत्त २०३
२. आनन्दभद्देकरत्तसुत्त २०३
३. महाकच्चानभद्देकरत्तसुत्त २०३
४. लोमसकङ्गियभद्देकरत्तसुत्त २०४
५. चूळकम्मविभङ्गसुत्त २०४
६. महाकम्मविभङ्गसुत्त २०५
७. सळायतनविभङ्गसुत्त २०६
८. उद्देसविभङ्गसुत्त २०८
९. अरणविभङ्गसुत्त २०८
१०. धातुविभङ्गसुत्त २०९
११. सच्चविभङ्गसुत्त २१०
१२. दक्खिणाविभङ्गसुत्त २११
५. सळायतनवग्ग २१२
१. अनाथपिण्डिकोवादसुत्त २१२
२. छन्नोवादसुत्त २१२
३. पुण्णोवादसुत्त २१४
४. नन्दकोवादसुत्त २१४
५. चूळराहुलोवादसुत्त २१५
६. छछक्कसुत्त २१५
७. महासळायतनसुत्त २१७
८. नगरविन्देय्यसुत्त २१८
९. पिण्डपातपारिसुद्धिसुत्त २१८
१०. इन्द्रियभावनासुत्त २१९

भूमिका

'सुत्तसार' में 'सुत्त पिटक'के सुत्तों का सार है।

भगवान बुद्ध की वाणी तीन पिटकों में सुरक्षित है – विनय पिटक, सुत्त पिटक तथा अभिधम्म पिटक। 'विनय पिटक' में अधिकतर भिक्षुओं-भिक्षुणिओं के लिए विनय का विधान है, 'सुत्त पिटक' में सामान्य साधकों के लिए दिये गये उपदेशों का संग्रह है और 'अभिधम्म पिटक' में विपश्यना साधना में खूब पके हुए साधकों के लिए गूढ़ धर्मोपदेश हैं।

बुद्ध-वाणी में 'सुत्त पिटक' का विशेष महत्त्व है क्योंकि सबसे अधिक सामग्री इसी पिटक में है और हर किसी के लिए उपयोगी भी। विपश्यना साधना सिखाते समय विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी भी इसी पिटक के उद्धरण दे-देकर धर्म समझाते हैं। अभिधम्म पिटक समझने के लिए भी सुत्त पिटक को जानने की जरूरत होती है जैसे छत पर जाने के लिए सीढ़ी की।

सम्यक संबुद्ध की वाणी का एक-एक शब्द सारगर्भित होता है। उसमें से सार निकालना अपने आपको धोखा देना है। अतः किसी भी पाठक के मन में यह भाव कदापि नहीं जागना चाहिए कि सार की बातें छांट-छांट कर यहां प्रस्तुत कर दी गयी हैं और बाकी सब कुछ निःसार है।

यह 'सुत्तसार' सुत्तों का सार इस मायने में है कि सुत्त पिटक में जो कुछ वर्णित है उसका यह स्थूल रूप में अविकल (बिना अपनी ओर से कुछ जोड़े-तोड़े) प्रस्तुतीकरण है। इस सार की तुलना उस बयार से की जा सकती है जो रंग-बिरंगे, सुगंधित पुष्पों के बीच में से लांघ कर मात्र उनकी सुगंध अपने साथ हर ले जाती है। यह 'सुत्तसार' भी भगवान के चित्र-विचित्र, निर्वाण की गंध से सुवासित उपदेशों का एक हल्का-सा **परिचयमात्र** है।

वस्तुतः यह ग्रंथ कोई नयी कृति नहीं है। विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा मूल रूप में प्रकाशित 'सुत्त पिटक' के हर ग्रंथ के साथ उसमें सम्मिलित सुत्तों का सार उनमें दिया गया है। आचार्य श्री सत्यनाराणजी गोयन्का के आदेशानुसार

यह सार इसलिए तैयार किया गया था कि साधक पहले इन्हें पढ़ कर फिर सुत्तों को पढ़ें, तो इससे सुत्त और अधिक अच्छी तरह समझ में आने लगेंगे।

अब आचार्यश्री सत्यनारायणजी गोयन्का ने यह उचित समझा है कि यदि ये सभी सुत्तसार स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर दिये जायँ तो एक अतिरिक्त लाभ यह होगा कि साधकगण जनभाषा के माध्यम से बुद्ध-वाणी को टुकड़ों-टुकड़ों में ही नहीं, बल्कि समग्र रूप से भी सुगमतापूर्वक समझने लगेंगे। आचार्यश्री के इसी चिंतन के फलस्वरूप यह कृति प्रस्तुत की जा रही है।

वर्तमान ग्रंथत्रय केवल सुत्तपिटक के सुत्तों का सार हैं जो कि पाठकों की सुविधा के लिए तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। इसके पहले भाग में दीघ एवं मज्झिम निकायों का, दूसरे में संयुत्त निकाय का और तीसरे में अंगुत्तर एवं खुद्दक निकायों का समावेश है।

जब सुत्तसार तैयार किये जा रहे थे, तब विपश्यना विशोधन विन्यास के उद्भट विद्वान डॉ. अंगराज चौधरी ने इनका निरूपण कर इनमें समुचित सुधार किये थे। इसके लिए मैं उनका अत्यंत आभारी हूं।

हमें विश्वास है कि इस कृति से विपश्यी साधकों को धर्म के अनेक अनजाने पक्षों की जानकारी मिलने के अतिरिक्त बुद्ध-वाणी को मूल रूप में पढ़ने की प्रेरणा भी मिलेगी।

सभी साधकगण के प्रति मंगल भावों सहित,

स. ना. टंडन

दीघनिकाय भाग - १

१. ब्रह्मजालसुत्त

इस सुत्त का आरंभ राजगह और नालन्दा के बीच के रास्ते पर भिक्षु-संघ के साथ भगवान बुद्ध की यात्रा के साथ होता है।

सुप्पिय परिव्राजक और उसके शिष्य ब्रह्मदत्त में बुद्ध, धर्म और संघ को लेकर वाद-विवाद चल रहा है। एक इनकी निंदा करता है तो दूसरा प्रशंसा।

इस प्रसंग को लेकर भगवान भिक्षुओं को समझाते हैं कि यदि कोई व्यक्ति बुद्ध, धर्म और संघ की निंदा करे तो उससे न तो वैर, न असंतोष और न चित्त में कोप करे। ऐसा करने से अपनी ही हानि होती है। बल्कि सच्चाई का पता लगाना चाहिए कि जो कुछ कहा जा रहा है वह ठीक है या नहीं। ऐसे ही यदि कोई व्यक्ति बुद्ध, धर्म और संघ की प्रशंसा करे तो उससे न तो आनंदित, न प्रसन्न और न हर्षोत्फुल्ल होना चाहिए। ऐसा करने से अपनी ही हानि होती है। बल्कि सच्चाई का पता लगाना चाहिए कि जो कुछ कहा जा रहा है वह ठीक है या नहीं।

तदुपरांत भगवान यह समझाते हैं कि अज्ञानी लोग तथागत की प्रशंसा छोटे या बड़े गौण शीलों के लिए करते हैं जब कि उनकी प्रशंसा उन गूढ़ धर्मों के लिए की जानी चाहिए जिन्हें वे स्वयं जान कर और साक्षात्कार कर प्रज्ञप्त किया करते हैं। इस प्रसंग में वे अपने समय में प्रचलित बासठ प्रकार की मिथ्या धारणाओं (दार्शनिक मतों) पर प्रकाश डालते हैं। इनमें से कुछ तो आत्मा और लोक के 'आदि' को और अन्य इनके 'अंत' को लेकर प्रचलित थीं। इनको उन्होंने क्रमशः 'पूर्वांतकल्पिक' और 'अपरांतकल्पिक' की संज्ञा दी है।

'पूर्वांतकल्पिक' धारणाओं के अंतर्गत ऐसी मान्यताएं बतलायी गयी हैं जैसे आत्मा और लोक नित्य हैं, आत्मा और लोक अंशतः नित्य और अंशतः अनित्य हैं, लोक अंतवान अथवा अनंत है, आत्मा और लोक बिना कारण उत्पन्न होते हैं,